स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री के जन्म शताब्दी समारोह के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री जी का संबोधन

2 अक्टूबर, 2004
नई दिल्ली

आदरणीय सोनिया जी, अटल जी, गुजराल जी, जयपाल जी

मित्रो,

एक महान भारतीय देशभक्त, स्वतंत्रता सेनानी, जननायक और असाधारण व्यक्तित्व वाले प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री जी के जन्म शताब्दी समारोह का शुभारम्भ करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। जहाँ यह एक संयोग की बात है कि शास्त्री जी का जन्म दिन और महात्मा गाँधी जी का जन्म दिन एक ही दिन आता है वहीं, महात्मा गांधी के मूल्यों एवं आदर्शों के प्रति उनकी चिरस्थायी प्रतिबद्धता सचमुच उल्लेखनीय है।

शास्त्री जी के जीवन का वर्णन गाँधीवादी सिद्धांतों के व्यावहारिक प्रयोग के एक उदाहरण के रूप में किया जाता है। सरकार में रहते हुए उन्होंने गाँधी जी के इस सिद्धांत का हमेशा पालन किया कि पद पर ''हमेशा नम्र रहो, अभिमानी नहीं''। शास्त्री जी की विनम्रता, सच्चाई और सादगी की सहज प्रवृत्ति ने उन्हें जनता के साथ गहरा रिश्ता कायम करने और उनके साथ आसानी से समझदारी विकसित करने में सक्षम बनाया।

यह उल्लेखनीय है कि शास्त्री जी ने भी अपनी पीढ़ी के अनेक लोगों की तरह असहयोग आन्दोलन को मजबूत करने हेतु गाँधी जी के आह्वान पर स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए अपनी पढ़ाई छोड़ दी थी। उन्हें पहली बार सत्रह साल की उम्र में गिरफ्तार किया गया था और फिर स्वतंत्रता आन्दोलन के अनेक नेताओं की तरह जेल उनका दूसरा घर बन गया। शास्त्री जी सात बार जेल गए और उन्होंने विभिन्न जेलों में लगभग नौ वर्ष विताए।

असहयोग आन्दोलन के परिणामस्वरूप, स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के वाबजूद श्री लाल बहादुर शास्त्री ने अपनी पढाई काशी विद्यापीठ से पुनः आरम्भ कर पूरी की। उन्हें दर्शनशास्त्र और मानविकी में ''शास्त्री'' की उपाधि प्रदान की गई और इसी कारण लोग उन्हें शास्त्री जी के नाम से संबोधित करते थे। ये वही वर्ष थे जब वे भारतीय समाज के सेवकों में शामिल हुए जिसने एक सादगी पसन्द, निष्ठावान, मेहनती और ईमानदार व्यक्ति के रूप में उनकी छवि को निखारा। शास्त्री जी ने ''नमक सत्याग्रह'' और ''भारत छोड़ो आन्दोलन'' सहित स्वतंत्रता संग्राम की अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं में भाग लिया। उनके संगठनात्मक कौशल की पहचान आरंभिक चरण में ही हो गई थी। शास्त्री जी की योग्यता तथा क्षमताओं को देखते हुए उन्हें 1937 में उत्तर प्रदेश के संसदीय बोर्ड का संगठन सचिव नियुक्त कर दिया गया।

आजादी के बाद शास्त्री जी ने राज्य स्तरीय राजनीति से राष्ट्रीय स्तर तक का सफर बड़ी तेजी से तय किया। हमारे गणतंत्र के प्रथम आम चुनावों के दौरान शास्त्री जी कांग्रेस पार्टी के महा सचिव थे। उम्मीदवारों के चयन और विज्ञापन तथा चुनाव प्रचार जैसे कार्यकलापों के दिशा-निर्देशन के लिए वे सीधे जिम्मेवार थे। उनकी योग्यता और कांग्रेस पार्टी के मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को देखते हुए पंडित जवाहर लाल नेहरू ने उन्हें राज्य सभा के लिए चुना ताकि सरकार में उनकी प्रतिभा का उपयोग किया जा सके।

शास्त्री जी का केन्द्रीय मंत्रीमंडल में प्रथम मंत्री पद का कार्यकाल 1952 में रेलवे तथा परिवहन मंत्री के रूप में था। उन्होंने रेलवे की कार्य-प्रणाली में सुधार लाने और इसे औपनिवेशिक युग से बाहर लाने का कार्य किया। आज युवा पीढ़ी के अनेक लोग उनके इन प्रयासों से अवगत नहीं होंगे लेकिन अधिकांश लोगों ने यह सुना होगा कि शास्त्री जी ने एक बड़ी दुर्घटना की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए मंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया था। उनके दृढ़ विश्वास की प्रशंसा करते हुए पंडित जी कहा करते थे कि "किसी भी संगठन में कोई भी व्यक्ति उनसे बेहतर साथी और सहयोगी नहीं हो सकता है।" इस धक्के के वाबजूद, शास्त्री जी ने पंडित जी के मंत्रिमंडल में परिवहन और संचार, वाणिज्य तथा गृह मंत्रालय सहित अनेक अन्य महत्वपूर्ण विभागों का कार्यभार संभाला।

पंडित जी के मंत्रिमंडल में अपने योगदान के अलावा, शास्त्री जी ने कांग्रेस पार्टी की तरक्की में भी योगदान दिया। इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि जब मई 1964 में पंडितजी का देहान्त हुआ तब उदास देश और पार्टी ने नेतृत्व के लिए शास्त्री जी को चुना। 1960 के दशक के आरम्भिक वर्षों में उत्तराधिकारी का चयन करना एक प्रमुख राष्ट्रीय चिन्ता का विषय था। "नेहरू के बाद कौन?" का प्रश्न समाचार पत्रों में हमेशा उठाया जाता था। श्री लाल बहादुर शास्त्री ने विश्व के समक्ष यह सिद्ध कर दिया कि वे योग्य उत्तराधिकारी थे।

प्रधानमंत्री के रूप में शास्त्री जी के अट्ठारह महीने का छोटा सा कार्यकाल हमारे गणतंत्र के लिए परीक्षा की घड़ी था। युद्ध तथा निजीकरण जैसे संकट के समय भी शास्त्री जी का असीम नैतिक साहस, चरित्र और सहज बुद्धि उनके शान्त एवं प्रभावशाली नेतृत्व में स्पष्ट झलकता था। वास्तव में, यह कहना असत्य नहीं होगा कि किसी भी लोकतंत्र में ऐसे कम ही नेता होंगे जो इतने कम समय में इतने ज्यादा संकटों से गुजरे हों। लेकिन जिस दक्षता और साहस से शास्त्री जी ने इन जटिल चुनौतियों का सामना किया, वह हमारे आज के इतिहास में एक प्रेरक अध्याय के रूप में दर्ज है। हमारे जैसे विशाल तथा जटिल देश को कठिनाई के समय में बाहर निकालने के लिए असाधारण साहस और पक्के इरादे की जरूरत पड़ती है। राष्ट्र हमेशा उनके इस नारे को याद रखेगा जिसमें उन्होंने हमारे सैनिकों और हमारे किसानों में राष्ट्र का गौरव पायाः **"जय जवान, जय किसान"**। सन् 1966 में ताशकंद में उनका आकस्मिक निधन हमारे देश के लिए एक बड़ी क्षति थी।

आज, श्री लाल बहादुर शास्त्री जी के जन्म शताब्दी समारोह का शुभारम्भ करते हुए हम उद्देश्यों के प्रति उनकी निष्ठा और सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को याद करते हैं। आज देश को संकटकाल से बाहर निकालकर आर्थिक एवं सामाजिक विकास के पथ पर आगे बढ़ाने के हमारे सामूहिक प्रयास में ये गुण आज के समय की मांग है। चाहे वे सैनिक हों, किसान हों, वैज्ञानिक हों, कामगार या उद्यमी हों, शिक्षक या जन-सेवक हों, प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया में अहम भूमिका अदा करता है। इसलिए शास्त्री जी द्वारा दिखाई गई प्रतिबद्धता की भावना के अनुकूल मैं आप सबसे यह अनुरोध करना चाहता हूँ कि हम आदर्शवाद की उस भावना को फिर से जागृत करें जिसने हमारे स्वतंत्रता संग्राम को प्रेरित किया था। शास्त्री जी जैसे देशभक्तों की स्मृति में उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम राष्ट्र-सेवा, सच्चाई का पालन, दृढ़-संकल्प, सादा जीवन और उच्च विचार जैसे बताए गए उनके सिद्धांतों का पालन करें।

मैं इस आशा के साथ अपनी बात समाप्त करना चाहूँगा कि श्री लाल बहादुर शास्त्री की जन्म शताब्दी को मनाने के लिए कार्यकलापों के आयोजन के संबंध में सरकार को परामर्श देने हेतु गठित विख्यात लोगों की राष्ट्रीय समिति भारत के इस महान सपूत की स्मृति को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए उपयुक्त कार्यक्रमों का आयोजन करेगी।

*****